04.07.2020. B.A. Part I
Economics Paper-II
National Income-II

Dr. Bipin Kumar
Professor, Deptt. of Economics
R.R.S. College, Mokama
P.P.U. Patna.

प्रश्न: राष्ट्रीय आय की परिभाषा दीजिए [illegible] (National Income) [illegible] राष्ट्रीय आय की गणना [illegible] कठिनाइयों [illegible] ? (Measurement of National Income and its difficulties also.)

Ans: आधुनिक विश्लेषण में राष्ट्रीय आय के अध्ययन का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है। किसी देश के उत्पादन साधनों ~~[illegible]~~ द्वारा किसी वर्ष में उत्पादित अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के मौद्रिक मूल्य को राष्ट्रीय आय कहा जाता है। राष्ट्रीय आय, राष्ट्रीय लाभांश, राष्ट्रीय व्यय, राष्ट्रीय उत्पादन आदि शब्दों को एक-दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त किया जा सकता है। राष्ट्रीय आय की उपर्युक्त और सही गणना करते समय उत्पादन में प्रयोग किये गए मशीनों, प्लान्ट, पूंजी में हुई घिसावट एवं उसमें हुए टूट-फूट और घिसावट को घटा दिया जाता है। प्रो० मार्शल, प्रो० पीगू, प्रो० फीशर सहित कई दूसरे अर्थशास्त्रियों जैसे, प्रो० क्लार्क, प्रो० साईमन कुजनेट्स एवं 'संयुक्त राष्ट्र संघ' के द्वारा दी गई परिभाषाएं भी काफी उल्लेखनीय एवं चर्चित हैं।

'प्रो० पीगू' के अनुसार, "राष्ट्रीय आय समाज की वस्तुगत आय का वह भाग है, जिसे मुद्रा में मापा जा सकता है एवं विदेशों से प्राप्त आय भी शामिल रहती है।"

"प्रो० मार्शल के अनुसार, "किसी देश का श्रम और पूंजी उसके प्राकृतिक साधनों पर कार्यशील होकर प्रतिवर्ष भौतिक एवं अभौतिक वस्तुओं का निश्चित वास्तविक उत्पादन करते हैं, जिनमें सभी प्रकार की सेवायें शामिल होती हैं, राष्ट्रीय आय कहलाती है।"

मार्शल की परिभाषा में वास्तविक शब्द से अभिप्राय, कुल उत्पादन में से कच्चे माल का मूल्य, घिसावट (अथवा मूल्य ह्रास) एवं कर तथा बीमा व्यय को निकालकर ही वास्तविक राष्ट्रीय आय ज्ञात की जा सकती है, जिसमें विदेशों से प्राप्त होनेवाली आय भी शामिल होती है। मार्शल की उपरोक्त परिभाषा की निम्नलिखित प्रमुख विशेषतायें हैं:

1. राष्ट्रीय आय की गणना का आधार एक वर्ष का है।
2. मार्शल ने राष्ट्रीय आय में विदेशों से अर्जित आय को भी शामिल किया है।
3. मार्शल ने राष्ट्रीय आय की गणना में केवल उत्पादन को आधार बनाया है।
4. मार्शल ने राष्ट्रीय आय की गणना कुल उत्पादन के आधार पर न करके शुद्ध राष्ट्रीय आय उत्पादन के आधार पर किया है (जो कि परिभाषा से स्पष्ट है)।

उपरोक्त विशेषताओं के बावजूद इस सरल एवं व्यापक परिभाषा की आलोचना निम्नलिखित आधार पर की जाती है:

1. सम्पूर्ण उत्पादन की गणना अत्यंत कठिन कार्य: देशभर में अनेक प्रकार एवं किस्मों का उत्पादन होता है तथा उनके साथ ही उत्पादक इकाइयाँ भी अनेकों होती हैं, ऐसी स्थिति में, उत्पादन के आधार पर राष्ट्रीय आय की गणना करना एक कठिन एवं जटिल प्रक्रिया मानी जाती है।

(ii) दोहरी गणना की त्रुटि (दोष) : इस संबंध में मार्शल ने स्पष्ट किया है कि राष्ट्रीय की गणना के समय दोहरी गणना की त्रुटि से बचना चाहिए। बावजूद इसके काफी सावधानी बरतने पर भी गलती हो ही जाती है, यथा पहले गन्ने के उत्पादन की गणना कर ली जाय बाद उससे शक्कर के उत्पादन की गणना भी राष्ट्रीय आय में कर ली जाय- फिर भी राष्ट्रीय आय का सही अनुमान लगाना कठिन प्रतीत होता है।

(iii) सही गणना में कठिनाई : सही गणना में कठिनाई इसलिए होती है कि कुछ वस्तुएँ ऐसी होती हैं जिनका उत्पादकों के द्वारा प्रत्यक्ष उपयोग कर लिया जाता है और इस तरह अनेक वस्तुएँ और सेवाएँ विनिमय में नहीं आ पाती हैं, जिससे राष्ट्रीय आय में इसे शामिल करना कठिन एवं जटिल प्रतीत होता है।

"प्रो० पीगू" ने राष्ट्रीय आय को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "राष्ट्रीय आय समाज की वस्तुगत आय का वह भाग है, जिसे मुद्रा में मापा जा सकता है एवं जिसमें विदेशों से प्राप्त आय भी शामिल होती है।"

"पीगू" की परिभाषा को मार्शल की परिभाषा की तुलना में अधिक व्यावहारिक एवं उपयुक्त माना गया है कारण कि राष्ट्रीय आय की गणना करने में मुद्रा में मापी जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं को ही केवल शामिल किया जाता है।

"प्रो० पीगू" की परिभाषा की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ हैं :

(i) इसमें राष्ट्रीय आय की गणना में विदेशों से प्राप्त आय को शामिल कर लिया गया है।
(ii) पीगू ने मुद्रा को मापक बनाकर परिभाषा को स्पष्ट, सरल एवं पारदर्शी बनाया है।
(iii) पीगू ने मुद्रा को मापदण्ड बनाकर राष्ट्रीय आय की गणना को सुविधाजनक, आसान एवं सरल बना दिया है कारण कि इससे आय की दोहरी गणना की कठिनाई से बचा जा सकता है।
(iv) पीगू की परिभाषा सरल एवं स्पष्ट तथा गणना में सरलता के कारण मार्शल की परिभाषा की तुलना में अधिक व्यावहारिक है।

उपरोक्त विशेषताओं के बावजूद मार्शल की तरह ही 'पीगू' की परिभाषा भी दोषरहित नहीं है, इसकी आलोचना निम्नवत है।

(i) संकीर्ण परिभाषा : इसके अंतर्गत बहुत-सी ऐसी वस्तुएँ हैं जिनका विनिमय नहीं किया जाता फिर भी वह राष्ट्रीय आय का हिस्सा है, अतः इसे संकीर्ण माना गया है। यथा, कोई भी किसान अगर अपनी उपज का वह भाग जो निजी उपभोग के लिए रखता है -- वह राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं होगा -- क्योंकि उसका विनिमय नहीं किया जाता -- जबकि यह उपज भी राष्ट्रीय आय का हिस्सा है।

(ii) राष्ट्रीय आय का सही आकलन : इसका राष्ट्रीय आय का मापदंड मुद्रा होने के बावजूद आय की गणना सही नहीं है। उदाहरणस्वरूप, एक शिक्षिका की सेवा ... [illegible] ... गृहिणियों की सेवाओं की गणना राष्ट्रीय आय में ... [illegible] ... अपने बच्चों को ... [illegible]

(iii) [illegible] सेवाओं में छूट : इसका माप केवल मुद्रा में होने के कारण [illegible] होना जाता है [illegible] वस्तु [illegible] नहीं [illegible] पीगू ने स्वयं [illegible] ''क्रय की जाने वाली एवं क्रय न की जाने वाली वस्तुओं में परस्पर कोई आधारभूत अन्तर नहीं पाया जाता है।''

(iv) वस्तु-विनिमय की अर्थव्यवस्थाओं में लागू नहीं : ऐसा माना जाता है कि पीगू की परिभाषा केवल विकसित अर्थव्यवस्थाओं में लागू होती है, जहाँ सम्पूर्ण विनिमय मुद्रा में होता है। अल्पविकसित अथवा पिछड़ी हुई अर्थव्यवस्थाओं में जहाँ अधिकांश वस्तुओं का विनिमय वस्तु रूप में होते हैं, राष्ट्रीय आय की गणना में शामिल करना कठिन है। अतः अमौद्रिक देशों में पीगू की परिभाषा लागू नहीं होती है। अतः सैद्धान्तिक रूप से, पीगू की परिभाषा को त्रुटिपूर्ण माना गया है।

अब हम प्रो० इरविंग फीशर की परिभाषा की व्याख्या करेंगे। उनके अनुसार ''वास्तविक राष्ट्रीय आय, एक वर्ष में उत्पादित शुद्ध उत्पादन का वह हिस्सा है जो कि उस वर्ष में प्रत्यक्ष रूप में उपभोग किया जाता है।'' इसे फीशर ने दूसरे तरह से भी परिभाषित किया है, ''राष्ट्रीय लाभांश तथा आय में केवल उन सेवाओं को शामिल किया जाता है जो अन्तिम उपभोक्ताओं के द्वारा प्राप्त की जाती हैं, चाहे उन्हें भौतिक वातावरण से प्राप्त किया गया हो या फिर मानवीय वातावरण से। उदाहरण तथा इस वर्ष एक पियानो या ओवरकोट जो मेरे लिए बनाया गया था वह केवल इस वर्ष की आय का हिस्सा नहीं है केवल पूँजी में वृद्धि है। वहाँ केवल उन्हीं सेवाओं जो मुझे इन वस्तुओं से प्राप्त होगी आय में शामिल होगी।''

इस परिभाषा की निम्नलिखित प्रमुख विशेषताएँ बतलायी गयी हैं:

(i) फीशर ने अपनी परिभाषा का प्रतिपादन 'उपभोग' के आधार पर किया है जबकि 'मार्शल' और 'पीगू' ने 'उत्पादन' को 'राष्ट्रीय आय' का आधार माना है।

(ii) फीशर की परिभाषा 'आर्थिक कल्याण' के ज्यादा करीब है क्योंकि 'उपभोग' का कल्याण से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। कारण कि केवल उत्पादन से ही कल्याण में वृद्धि नहीं होती है।

(iii) आलोचकों के अनुसार, फीशर की परिभाषा अधिक तर्कपूर्ण एवं वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक है मार्शल की परिभाषा के अनुसार।

अब हम फीशर की परिभाषा की आलोचना प्रस्तुत करेंगे।

फीशर की परिभाषा को मार्शल एवं पीगू की परिभाषा से अधिक उचित एवं व्यावहारिक माना गया है। कारण कि कल्याण का सम्बन्ध उपभोग से होता है एवं अनुचित उपभोग से भी हो सकता है। जहाँ तक उत्पत्ति का प्रश्न है तो कल्याण पर उसका अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। अतः हम यह कह सकते हैं कि फीशर की परिभाषा उपभोग पर आधारित होने के कारण अधिक उपयोगी एवं व्यावहारिक है जबकि फीशर मार्शल एवं पीगू के द्वारा [illegible] धारणा को [illegible] उत्पादन में वृद्धि करने से ही कल्याण में भी वृद्धि हो सकती है।

उपरोक्त विशेषताओं एवं गुणों के बावजूद फीशर की परिभाषा की आलोचना निम्नलिखित आधार पर की जा सकती है :

(i) गणना कठिन : उत्पादन की तुलना में वास्तविक उपभोग के मौद्रिक मूल्य की गणना करना ज्यादा कठिन समझा जाता है।

(ii) अव्यावहारिक : फीशर की परिभाषा को टिकाऊ वस्तुओं के उपभोग की राष्ट्रीय आय में गणना एक कठिन एवं अव्यावहारिक कदम माना गया है। (सु.पु.राष्ट्रीय आय)

(iii) दोहरी गणना की समस्या : उपभोग की दृष्टि से टिकाऊ वस्तुओं की गणना काफी कठिन मानी गयी है क्योंकि इनके आयुष्य और मूल्य में परिवर्तन होता रहता है। उदाहरणस्वरूप, एक मोटर जो इस साल खरीदी अगले वर्ष किसी और को बेच दी जाय तो यहाँ राष्ट्रीय आय में इसकी कीमत को शामिल किया जाना वास्तविक रूप से दोहरी गणना होगी।

श्रेष्ठ: अब हम तीनों ही परिभाषाओं में कौन सी परिभाषा श्रेष्ठ है की चर्चा करेंगे। यद्यपि तीनों ही परिभाषाओं के अपने-अपने गुण-अवगुण एवं विशेषतायें हैं फिर भी तीनों में कौन श्रेष्ठ है? यह इस बात पर निर्भर है कि राष्ट्रीय आय की गणना का उद्देश्य क्या है। यदि हम राष्ट्रीय उपभोग को ज्ञात करना चाहते हैं तो फिशर की परिभाषा उपयुक्त मानी गयी है।

जहाँ तक मार्शल एवं फीशर की परिभाषा की तुलना की बात है तो दोनों में अधिक अन्तर नहीं है कारण कि उत्पादन का अंतिम उद्देश्य उपभोग ही है।

जहाँ तक मार्शल और पीगू की परिभाषा की तुलना की बात हो तो यदि देश में वस्तुओं और सेवाओं की गणना करना संभव है तो मार्शल की परिभाषा अधिक श्रेष्ठ मानी गयी है।

जहाँ तक मार्शल, फीशर एवं पीगू की परिभाषा में श्रेष्ठता की बात है तो जब पूरी अर्थव्यवस्था ही मौद्रिक हो और दोहरी गणना से बचना हो तो पीगू की तरह गणना से बचा जाना संभव है, अतः यहाँ पीगू की परिभाषा अधिक श्रेष्ठ है।

आधुनिक परिभाषा

अब हम कुछ आधुनिक परिभाषाओं की चर्चा करेंगे :

"प्रो० कोलिन क्लार्क के अनुसार, "किसी विशेष अवधि में राष्ट्रीय आय को उन वस्तुओं एवं सेवाओं के मौद्रिक मूल्य में व्यक्त किया जाता है जो उस विशेष अवधि में उपभोग के लिए मौजूद रहती हैं। वस्तुओं एवं सेवाओं का मूल्य उनके प्रचलित मूल्य पर निकाला जाता है।"

इस परिभाषा में, जहाँ एक ओर वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन किया जाता है, दूसरी ओर उनका अंतिम उद्देश्य उपभोग माना जाता है। इसमें 'मार्शल' और 'फीशर' के परिभाषाओं का सम्मिश्रण है।

प्रो० साइमन कुजनेट्स की परिभाषा फिशर की परिभाषा से मिलती-जुलती है, कारण कि इसमें उपभोग पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। इनके अनुसार, "राष्ट्रीय आय वस्तुओं एवं सेवाओं का वह वास्तविक उत्पादन है जो एक वर्ष की अवधि में देश की उत्पादन प्रणाली से अंतिम उपभोक्ताओं के हाथों में पहुँचता है।"

* अब हम संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार